# चुनावी चक्कर में और उलझ गया चीनी उद्योग

- स्वीकृत राहत पैकेज का 50 फीसद भी नहीं मिला चीनी मिलों को
- ठप हुआ चीनी निर्यात, अफसरशाही के चक्कर में फंसा चीनी उद्योग

सुरेंद्र प्रसाद सिंह, नई दिल्ली

चुनावी चक्कर में चीनी उद्योग इस कदर उलझ गया है कि उसकी मुश्किलें और बढ़ गई हैं। चीनी मिलों का घाटा कम करने का सरकारी प्रयास जहां नाकाफी साबित हुआ है, वहीं गन्ना किसानों का बकाया बढ़कर सातवें आसमान को छूने लगा है। चीनी उद्योग के लिए मंजूर राहत पैकेज का लाभ मिलों को नहीं मिलने से उनकी समस्याएं बढ़ गई हैं।

चुनाव के ठीक पहले केंद्र सरकार ने किसानों को लुभाने के लिहाज से मिलों को बैंकों से ब्याज मुक्त ऋण समेत कई रियायतें देने का एलान किया था। लेकिन चुनाव शुरू होने के बाद की स्थितियां बिल्कुल उलट गई हैं। न किसानों का भुगतान हो पा रहा है और न ही मिलों की नगदी संकट की समस्या सुलझ पाई है। चालू पेराई सीजन में गन्ने का भुगतान केवल 20 फीसद ही हो पाया है। घाटे से जूझ रही चीनी मिलों को उबारने के लिए केंद्र सरकार ने 6600 करोड़ रुपये का प्रावधान किया था। इसके तहत मिलों को गन्ना बकाये का भुगतान करने लिए बिना ब्याज के ऋण मुहैया कराया जाना था। हैरानी इस बात की है कि अफसरशाही के चक्कर में इसका 50 फीसद भी मिलों को नहीं मिल सका है। लिहाजा गन्ना किसानों का बकाया बढ़कर 10 हजार करोड़ रुपये हो गया है। भारतीय चीनी मिल संघ का कहना है कि अगर यही हाल रहा तो मिलों में पेराई बंद होने तक यह बकाया बढ़कर 12 हजार करोड़ हो जाएगा।

चीनी निर्यात को प्रोत्साहन न मिलने से निर्यात ठप हो गया है। अधिसूचना जारी न हो पाने की वजह से महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु जैसे राज्यों में छह लाख टन कच्ची चीनी निर्यात का सौदा अटका पड़ा है। इस तरह रिफाइन चीनी निर्यात के कई सौदे पक्के हो चुके हैं। लेकिन सरकार की ओर से दी जाने वाली 3300 रुपये प्रति टन का प्रोत्साहन नहीं मिल पाने से सौदा रुक गया है। इंडियन शुगर मिल्स एसोसिएशन (इस्मा) के मुताबिक गन्ना एरियर के भुगतान नहीं हो पा रहे है। केंद्र सरकार के स्वीकृत पैकेज का आधा भी खर्च नहीं हो पाया है। सरकार के ढीले ढाले रवैये के चलते मिलों को ब्याज मुक्त ऋण नहीं मिल पा रहा है। इसी के चलते किसानों का भुगतान संभव नहीं हो पा रहा है।

30 अप्रैल को समाप्त हुए पखवाड़े तक राष्ट्रीय स्तर पर चीनी का उत्पादन 2.37 करोड़ टन हुआ है, जबकि पिछले साल की इसी अवधि तक 2.46 करोड़ टन हो गया था। पेराई सीजन लगभग खत्म होने को है। फिलहाल 80 मिलों में पेराई चल रही है। महाराष्ट्र में अब तक 79 लाख टन चीनी तैयार हो चुकी है, जबकि कोल्हापुर और पुणे जोन की केवल 15 मिलों में पेराई जारी है। उत्तर प्रदेश में चीनी का उत्पादन अब तक 64 लाख टन हो चुका है और केवल 10 मिलों में पेराई चालू है। बाकी मिलें बंद हो चुकी हैं। चीनी का उत्पादन पिछले साल के मुकाबले भले ही लगभग 10 लाख टन कम होगा, लेकिन कैरीओवर स्टॉक अधिक होने की वजह से मिलें वित्तीय सांसत में है। लिहाजा गन्ना किसानों के भुगतान में भारी मुश्किलें पेश आएंगी।

Daimik Jagaran

7/5/14

✓ N